2 जून 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 5 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (प्रथम), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

निवेदन

अब लोनावाला प्रकरण को पूर्ण विराम दें !

लोनावाला स्थित जिनमन्दिर में स्थापित भगवान आदिनाथ के दिगम्बर जिनबिम्ब के प्रसंग में मुमुक्षु समाज में चलनेवाले अन्तर्द्वन्द के सन्दर्भ में डॉ. हुकमचंद भारिल्ल ने बताया ''मैंने वहाँ जो कुछ भी सहयोग दिया है, वह सब अत्यन्त पवित्र भाव से दिया है, गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की भावना से दिया है। मैंने अपना जीवन इसी काम को समर्पित कर दिया है। भविष्य में भी यह करने का पक्का निर्णय है।

भविष्य में इसप्रकार का कोई उपक्रम हमारे द्वारा नहीं किया जायेगा। अत: भविष्य में इसप्रकार की पुनरावृत्ति की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।''

विस्तार से हुई चर्चा के उपरान्त निम्नांकित निष्कर्ष प्रतिफलित हुए -

1. लोनावाला स्थित जिनमन्दिर में स्थापित दिगम्बर जिन प्रतिमा की पूजन प्रक्षाल शुद्ध तेरह पंथ आम्नाय से हो एवं प्रतिमा की विनय, शुद्धि आदि की सुनिश्चितता हेतु डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, अल्केश दिनेश मोदी जैन अध्यात्म केम्पस, लोनावाला के संस्थापक - अध्यक्ष श्री दिनेशभाई मोदी से सम्पर्क करके हर सम्भव प्रयास करेंगे। यथा -

(अ) शुद्ध तेरह पंथ - दिगम्बर आम्नाय की नियमावली वहाँ लिखवाकर स्थापित करने की व्यवस्था;

(ब) दिगम्बर जिन प्रतिमा को अलग करने के लिये बीच में शोभास्पद पार्टीसन आदि की उचित व्यवस्था।

2. सभी मुमुक्षु संस्थाएँ पूज्य गुरुदेवश्री की रीति-नीति के अनुसार तत्त्वप्रचार करते हुए मुमुक्षु समाज की एकता एवं अखण्डता हेतु प्रतिबद्ध रहें - ऐसे कार्य किये जायें।

3. किसी भी विषम परिस्थिति में पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा अपनाई गई रीति-नीति का ही अनुकरण किया जाये।

सभी गुरुभक्त आत्मार्थी मुमुक्षु बंधुओं से निवेदन है कि इस विषय को यहीं पूर्ण विराम देकर, अपनी सहृदयता एवं मुमुक्षु समाज की अखण्डता के प्रति अपने प्रेम का परिचय दें। जयजिनेन्द्र।

(डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल) (अनन्तराय ए. सेठ) (पवन जैन) (अजित जैन)
जयपुर मुम्बई अलीगढ बड़ौदरा

मुमुक्षु समाज : आत्मबल की धनी

- देवेन्द्र जैन, अलीगढ

(पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया द्वारा मंगलायतन टाइम्स के संपादकीय के रूप में लिखा गया यह महत्वपूर्ण और सामयिक आलेख सभी के लाभार्थ यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है - सह संपादक)

यद्यपि जैन समाज अनेक वर्गों में विभाजित है; किन्तु पूज्य गुरुदेवश्री के अनुयायियों की एकता सम्पूर्ण जैन समाज में विख्यात है।

यह तो सर्व विदित है कि वर्तमान में जैन समाज की संख्या अत्यधिक न्यून है; उसमें भी दिगम्बर जैन वर्ग की संख्या अल्प है और पूज्य गुरुदेवश्री के अनुयायियों की संख्या तो अंगुली पर गिनने जितनी मात्र ही है।

संख्या की दृष्टि से अति अल्प होने पर भी पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्राप्त तत्त्वज्ञान के प्रभाव से, आत्मबल की दृष्टि से मुमुक्षु समाज का स्थान, सम्पूर्ण जैन समाज में सर्वोपरि है। सत्य कभी संख्या का मोहताज होता भी नहीं है; परन्तु यदि हम अपना आत्मबल खो बैठे तो.....।

यह हमारा सौभाग्य है कि हमें इस विषम पंचम काल में पूज्य गुरुदेवश्री जैसे स्वात्मानुभवी सत्पुरुष का योग हुआ और 45 वर्षों तक अविरल प्रवाहित उनकी दिव्यवाणी के रसपान का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज हम पूज्य गुरुदेवश्री को युगदृष्टा के रूप में नहीं, किन्तु युगसृष्टा के रूप में स्वीकार करते हैं। गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान की जड़ें इतनी गहरी हैं कि भयंकर विरोध के आँधी-तूफानों में भी अविरल गति से यह तत्त्वज्ञान निरन्तर प्रवाहित हो रहा है और नये-नये साधर्मी इस धारा में निरन्तर जुड़ रहे हैं।

किसी भी बड़े मिशन में मतभेद होना स्वाभाविक है, परन्तु उसमें मनभेद को कोई स्थान नहीं है; साथ ही मतभेदों का समाधान भी तत्त्वज्ञान एवं पूज्य गुरुदेवश्री की रीति-नीति के अनुरूप ही सम्भव है। मुमुक्षु समाज, आज तक इस रीति-नीति पर चलते हुए अखण्डरूप से वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न है।

पूज्य गुरुदेवश्री के देह परिवर्तन के 31 वर्ष पश्चात् भी आज उनके द्वारा प्रदत्त तत्त्वज्ञान, देश-विदेश में तीव्र गति से प्रचारित-प्रसारित हो रहा है। सम्पूर्ण देश में उनके मिशन का प्रचार-प्रसार करने वाले अनेक धर्मायतन हमारी अभिवृद्धि एवं समृद्धि के प्रतीक हैं।

अभी कुछ समय से लोनावाला स्थित जैनमंदिर के प्रतिष्ठा प्रकरण में हमारे कुछ साधर्मी भाई क्षुब्ध हुए और पारस्परिक पत्राचार का एक सिलसिला

(शेष पृष्ठ 12 पर...)

सम्पादकीय – 57

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ८८

पिछली गाथा में धर्म एवं अधर्मद्रव्य के स्वरूप का कथन है। तथा लोक–अलोक का विभाग उक्त दोनों द्रव्यों के सद्भाव से दर्शाया है।

अब प्रस्तुत गाथा में उक्त दोनों द्रव्यों को उदासीन निमित्त रूप कहा गया है। मूल गाथा इसप्रकार है –

ण य गच्छदि धम्मत्थी गमणं ण करेदि अण्णदवियस्स।
हवदि गदिस्स य पसरो जीवाणं पोग्गलाणं च ॥८८॥

(हरिगीत)

होती गति जिस द्रव्य की स्थिति भी हो उसी की।
वे सभी निज परिणाम से ठहरें या गति क्रिया करें।।८८।।

धर्मास्तिकाय गमन नहीं करता और अन्य द्रव्य को भी गमन नहीं कराता; वह तो स्वयं गमन करते हुए जीवों तथा पुद्गलों के गमन में मात्र उदासीन निमित्त होता है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि धर्म और अधर्मद्रव्य गति और स्थिति के हेतु होने पर भी वे अत्यन्त उदासीन हैं।

जिसप्रकार गतिपरिणत पवन ध्वजाओं के गति कर्ता दिखाई देते हैं, वैसा धर्मद्रव्य जीव व पुद्गलों का गति कर्ता/कराता नहीं है। वह धर्म द्रव्य तो वास्तव में निष्क्रिय है तथा जीव व पुद्गलों की गति में अत्यन्त उदासीन निमित्त मात्र है, कर्त्ता नहीं।

जिसप्रकार पानी मछलियों के गति में उदासीन कारण है, वैसे जीव और पुद्गलों की गति में धर्म द्रव्य उदासीन कारण है। इसीप्रकार अधर्म द्रव्य के बारे में जानना चाहिए। इसका उदाहरण यह है कि जैसे पृथ्वी अश्व को गतिपूर्वक स्थिति में मात्र आश्रयरूप कारण है, वैसे ही स्वयं गमनपूर्वक स्थिति में जीव व पुद्गलों की उदासीन निमित्तता है।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

आप धरम चलता नहीं औरहिं करहि न चाल।
पुद्गल–जीव सुभावकै, गति विस्तरै त्रिकाल।।३९१।।

(सवैया इकतीसा)

जैसें वायु चलै आप धुजा कौ चलावै और,
तातैं धुजा हलनै का हेतु वायुकर्त्ता है।
तैसैं धर्मनिष्क्रिय है कदाकाल चालै नाहिं,
सदाजीव–पुद्गल की गति का धर्ता है।।
जैसैं तोय मछली कौं आसरा सहाय करै,
तैसे जीव अनू लौं धरम दर्व भर्त्ता है।।
आप तौ न चलै कबै पर कै चलाइवै का,
बाहिर सहारा लसै, राग–द्वेष हर्ता है।।३९२।।

(दोहा)

यातैं दौनौं दरव ए, लसै सदा असमान।
पुद्गल–जीव क्रिया सधै, यह उपचार बखान।।३९४।।

कवि उक्त छन्दों में कहते हैं कि धर्मद्रव्य स्वयं तो निष्क्रिय है; परन्तु यह धर्म द्रव्य जीव व पुद्गलों के गमन में मात्र निमित्त बनता है। जिसप्रकार पानी मछली के चलने में निमित्त होता है, वैसे ही धर्म द्रव्य जीव व पुद्गलों के चलाने में निमित्त होता है।

इस गाथा पर प्रवचन करते हुए श्री सत्पुरुष कानजी स्वामी ने कहा है कि ''धर्म द्रव्य स्वयं हलन–चलन नहीं करता तथा अन्य जीवों एवं पुद्गलों को भी प्रेरक बनकर हलन–चलन नहीं कराता। धर्म द्रव्य स्वयं गमन करते हुए जीवों व पुद्गलों के गमन में मात्र उदासीन निमित्त बनता है। इसीप्रकार अधर्म भी गतिपूर्वक स्थिति करते हुए जीवों व पुद्गलों की स्थिति में मात्र उदासीन निमित्त होता है।

आगे दृष्टान्त देते हैं कि जो जीव अपने आत्मा के आश्रय से सिद्धदशा प्रगट करता है तो तीर्थंकर प्रकृति उत्तम संहनन वगैरह निमित्त कहे जाते हैं, उसीप्रकार धर्मद्रव्य स्वयं गति करते हुए जीव व पुद्गलों की गति में निमित्त होते हैं। तथा जो जीव शुद्धात्मा में स्थिरता करते हैं, उन्हें पंचपरमेष्ठी का स्मरण निमित्त कहा जाता है। जो ऐसा विचार करता है कि ये पाँचों आत्मा में हैं, जड़ में नहीं। उनके निमित्त से ऐसा भान करे कि ऐसी योग्यता मुझ में भी है, मैं परिपूर्ण आत्मा हूँ, जो ऐसा ज्ञान कर स्वभाव में स्थिरता करता है, उसे पंच परमेष्ठी का विकल्प निमित्त कहलाता है।''

इस दृष्टान्त के अनुसार जो जीव व पुद्गल अपने कारण गतिपूर्वक स्थिति करते हैं, उसे अधर्मद्रव्य का निमित्त कहलाता है।

इसप्रकार विविध दृष्टान्तों से धर्मद्रव्य एवं अधर्मद्रव्य का खुलासा हुआ। ●

चौंसठ ऋद्धि विधान संपन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ घेरखोखल मौहल्ले में पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद द्वारा चौंसठ ऋद्धि विधान कराया गया। साथ ही जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का हार्दिक आमंत्रण दिया।

इसके पश्चात् मैनपुरी, शिकोहाबाद, आराँव, कुरावली, करहल, जसवंतनगर, जैतपुरकलां, वाह आदि स्थानों पर भी पण्डित सोनूजी शास्त्री के विशेष व्याख्यान हुये एवं पंचकल्याण का हार्दिक आमंत्रण दिया गया। आपके साथ–साथ पण्डित अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, पण्डित विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद, पण्डित अनुराजजी शास्त्री फिरोजाबाद के व्याख्यानों का भी लाभ मिला।

दिनांक ३१ जुलाई से ९ अगस्त तक जयपुर में लगने वाले वर्षाकालीन शिक्षण शिविर में अवश्य पधारें।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

75 बीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

निश्चयाभासी और व्यवहाराभासी की परिणति का निरूपण होने के बाद अब **उभयाभासी के संबंध में बात करते हैं।**

जैनदर्शन में दो नय कहे हैं। उक्त दोनों नयों में अकेले निश्चयनय को माननेवाले निश्चयाभासी हैं और अकेले व्यवहारनय को माननेवाले व्यवहाराभासी हैं। इसप्रकार दोनों ही एकान्तवादी हैं। हम दोनों नयों को मानते हैं; इसलिए हम अनेकान्तवादी हैं।

ऐसा कहनेवाले लोग न तो सही रूप में निश्चयनय को समझते हैं और न व्यवहारनय को; परन्तु उन्हें यह जंच गया है कि अकेले निश्चयनय को माननेवाले भी सही नहीं हैं और अकेले व्यवहारनय को माननेवाले भी सही नहीं हैं। अत: हम दोनों नयों को मान लेते हैं।

इसप्रकार वे निश्चयाभासी के समान निश्चय को और व्यवहाराभासी के समान व्यवहार को मानकर उभयाभासी हो जाते हैं।

उनकी प्रवृत्ति का चित्रण करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''अंतरंग में आपने तो निर्धार करके यथावत् निश्चय-व्यवहार मोक्षमार्ग को पहिचाना नहीं, जिन आज्ञा मानकर निश्चय-व्यवहाररूप मोक्षमार्ग दो प्रकार मानते हैं। सो मोक्षमार्ग दो नहीं हैं, मोक्षमार्ग का निरूपण दो प्रकार है।

जहाँ सच्चे मोक्षमार्ग को मोक्षमार्ग निरूपित किया जाय सो 'निश्चय मोक्षमार्ग' है। और जहाँ जो मोक्षमार्ग तो है नहीं, परन्तु मोक्षमार्ग का निमित्त है व सहचारी है, उसे उपचार से मोक्षमार्ग कहा जाय सो 'व्यवहार मोक्षमार्ग' है; क्योंकि निश्चय-व्यवहार का सर्वत्र ऐसा ही लक्षण है।

सच्चा निरूपण तो निश्चय, उपचार निरूपण सो व्यवहार; इसलिए निरूपण-अपेक्षा दो प्रकार मोक्षमार्ग जानना। (किन्तु) एक निश्चय मोक्षमार्ग है, एक व्यवहार मोक्षमार्ग है – इसप्रकार दो मोक्षमार्ग मानना मिथ्या है।[१]''

इस मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र में मोक्षमार्ग का निरूपण होने से यहाँ निश्चय-व्यवहारनयों को भी मोक्षमार्ग पर घटित कर रहे हैं।

ये उभयाभासी लोग मोक्षमार्ग का स्वरूप तो समझते नहीं; किन्तु जैनधर्म की आज्ञा मानकर दो मोक्षमार्ग मान लेते हैं।

वस्तुस्थिति यह है कि मोक्षमार्ग तो एक ही है, दो नहीं; किन्तु मोक्षमार्ग का निरूपण दो प्रकार से किया जाता है।

यद्यपि सच्चा मोक्षमार्ग तो एकमात्र निश्चय मोक्षमार्ग ही है; तथापि जो शुभभाव या शुभक्रिया निश्चय मोक्षमार्गी जीव के पाई जाती है, उन्हें निमित्त की अपेक्षा उपचार से व्यवहारमोक्षमार्ग कह देते हैं; क्योंकि सच्चे निरूपण को निश्चय और उपचरित निरूपण को व्यवहार कहते हैं।

इस पर शिष्य कहता है कि हम तो ऐसा मानते हैं कि अपने आत्मा को सिद्धसमान शुद्ध अनुभव करना निश्चय है और व्रत, शील, संयमादिरूप प्रवृत्ति करना व्यवहार है।

इसका उत्तर देते हुए पण्डित टोडरमलजी कहते हैं –

''किसी द्रव्यभाव का नाम निश्चय और किसी का व्यवहार – ऐसा नहीं है। एक ही द्रव्य के भाव को उस स्वरूप ही निरूपण करना सो निश्चय है, उपचार से उस द्रव्य के भाव को अन्य द्रव्य के भावस्वरूप निरुपण करना सो व्यवहार है। जैसे – मिट्टी के घड़े को मिट्टी का घड़ा निरूपित किया जाय सो निश्चय और घृतसंयोग के उपचार से उसी को घृत का घड़ा कहा जाय सो व्यवहार। ऐसे ही अन्यत्र जानना।[१]''

इस पर व्यवहाराभासी कहता है कि हम श्रद्धान तो निश्चय का रखते हैं और प्रवृत्ति व्यवहाररूप करते हैं। इसप्रकार हम दोनों नयों को स्वीकार करते हैं। इस पर पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि यह ठीक नहीं है; क्योंकि **निश्चय का निश्चयरूप और व्यवहार का व्यवहाररूप श्रद्धान करना योग्य है; क्योंकि एक नय का श्रद्धान करने से तो एकान्त होता है और प्रवृत्ति में तो नय का प्रयोजन ही नहीं है।**

प्रवृत्ति तो द्रव्य की परिणति है, ***जिस द्रव्य की परिणति हो, उसे उसी द्रव्य की कहना, निश्चयनय है और उसी को अन्य द्रव्य की कहना व्यवहारनय है।*** ऐसे अभिप्राय से प्रवृत्ति में दोनों नय बनते हैं, प्रवृत्ति स्वयं नयरूप नहीं है।

इसलिए निश्चयनय के निरूपण को सत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान करना और व्यवहारनय का निरूपण असत्यार्थ मानकर छोड़ना।

अपनी बात को स्पष्ट करते हुए पण्डित टोडरमलजी कहते हैं –

''व्यवहारनय स्वद्रव्य-परद्रव्य को व उनके भावों को व कारण-कार्यादिक को किसी को किसी में मिलाकर निरूपण करता है; सो ऐसे ही श्रद्धान से मिथ्यात्व है; इसलिए उसका त्याग करना।

तथा निश्चयनय उन्हीं को यथावत् निरूपण करता है, किसी को किसी में नहीं मिलाता है; सो ऐसे ही श्रद्धान से सम्यक्त्व होता है; इसलिए उसका श्रद्धान करना।[२]''

उक्त कथन से यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि व्यवहारनय असत्यार्थ होने से हेय है और निश्चयनय सत्यार्थ होने से उपादेय है।

उक्त निश्चय-व्यवहारनयों को इसी रूप में स्वीकार करना ही दोनों नयों को अंगीकार करना है। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २४८-२४९

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २४९ २. वही, पृष्ठ २५१

44वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1315 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। शिविर में लगभग 47 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। प्रवेशिका प्रशिक्षण में 77 एवं बालबोध प्रशिक्षण कक्षाओं में 221 विद्यार्थी सम्मिलित। शिविर में लगभग 52 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं लगभग 21000 घण्टों के सी.डी. व डी.वी.डी. प्रवचन घर–घर पहुँचे।

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा द्वारा दिनाँक 15 मई से 1 जून, 2011 तक आयोजित 45 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय–ध्याता बजाज परिवार कोटा, **शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता** श्री कैलाशचंदजी प्रकाशचंदजी सेठी परिवार लालकोठी जयपुर, **शिविर के आमंत्रणकर्त्ता** श्रीमती मीना अनूप शाह मुम्बई, श्री अर्पित जैन सुपुत्र श्रीमती किरण एवं अशोक कुमार जैन मुम्बई, श्रीमती स्वाति ध.प. वैभव जैन माताजी श्रीमती सुशीला ध.प. श्री अजितप्रसादजी जैन राजपुर रोड़ दिल्ली थे।

प्रात:कालीन प्रवचन – प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के पुण्यपाप अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचन – प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के **लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका** के आधार से प्रवचन के अतिरिक्त उससे पूर्व क्रमश: डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री मन्दसौर, डॉ. श्रीयांसजी शास्त्री जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित जयकुमारजी जैन कोटा, पण्डित जिनचंदजी अलमान, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – पण्डित अनंतजी विश्वंभर सेलू, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित आदित्यजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री विराटनगर, डॉ. अरविन्दकुमारजी शास्त्री सुजानगढ, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित परेशजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाडा के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने ली। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित कोमलचन्दजी टडा द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में डॉ.नरेन्द्रजी जैन मन्दसौर, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित अनंतजी विश्वंभर सेलू, पण्डित पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित महावीरजी मांगुलकर कारंजा, पण्डित विजयजी बोरालकर, विदुषी कमलाजी भारिल्ल जयपुर, विदुषी शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, विदुषी रंजनाजी बंसल अमलाई, डॉ. ममता जैन बांसवाडा, श्रीमती शुभांगी मांगुलकर एवं कु.परिणति पाटील का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रौढ़ कक्षायें – नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, **गुणस्थान विवेचन** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, **न्याय मन्दिर** की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, **छहढाला** की कक्षा पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं **गोम्मटसार जीवकाण्ड** की कक्षा पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर ने ली।

प्रात: 5 बजे की **प्रौढ़ कक्षा** में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा का लाभ मिला।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीन समय कक्षाओं का आयोजन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें 108 बच्चे सम्मिलित हुये। प्रत्येक बालक ने बालबोध पाठमाला के तीनों भागों की परीक्षा दी एवं पण्डित आराध्य टडैया के निर्देशन में रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन एवं दीक्षान्त समारोह – मंगलवार, दिनांक 31 मई को दोपहर में आयोजित इस समारोह में अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पश्चात् पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की साथ ही पण्डित कोमलचन्दजी टडा एवं पण्डित कमलचन्दजी पिडावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा–परिणाम प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों के अतिरिक्त उत्तीर्ण समस्त प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया। ●

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण भेजें !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु हमारे पास आमंत्रण–पत्र आना प्रारंभ हो गये हैं। जो भी अपने जिनमंदिर में विद्वान की व्यवस्था चाहते हैं, वे अपना आमंत्रण–पत्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को अपनी स्वीकृति भेजने हेतु पत्र भी भेज दिये गये हैं, एतदर्थ विद्वानों से भी निवेदन है कि वे अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें। **– मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का –

चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक २९ मई को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का चतुर्थ अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सतीशजी मेहता अहमदाबाद, श्री अशोककुमारजी जैन भोपाल एवं श्री महेन्द्रजी जैन भोपाल उपस्थित थे। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित रतनचन्दजी चौधरी कोटा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा आदि मंचासीन थे।

परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने स्नातक परिषद् की स्थापना और कार्य की जानकारी दी।

इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों ने स्वयं का एवं स्वयं के द्वारा किये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्यों का परिचय देते हुये परिषद की गतिविधियों को आगे बढाने के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। इसके पश्चात् मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष महोदय ने भी अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

नवगठित महाराष्ट्र प्रान्तीय कार्यकारिणी के उपस्थित सदस्यों को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा शपथ दिलायी गई।

मंगलाचरण पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई ने एवं संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

अहिंसा शाकाहार रथ उद्घाटन

जयपुर (राज.) : दिनांक 29 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश द्वारा 15 दिन तक राजस्थान के 15 जिलों के 75 गाँवों में परिभ्रमण करने वाले अहिंसा शाकाहार रथ का उद्घाटन मौली लच्छा खोलकर पूर्व गृहमंत्री एवं विधायक गुलाबचंद कटारिया ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. हुकमचंद भारिल्ल थे। अध्यक्षता भाजयुमो प्रदेश अध्यक्ष ऋषि बंसल जयपुर ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मजी भारिल्ल व राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मजी भारिल्ल मौजूद थे। **ह्न जिनेन्द्र शास्त्री, प्रदेश अध्यक्ष**

पाषाण शुद्धि संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में होनेवाले पंचकल्याणक हेतु विराजमान होने वाले जिनबिम्बों के शिलाखण्ड की शास्त्रोक्त विधि से शुद्धि का भव्य कार्यक्रम दिनांक 22 मई को आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पूजन के पश्चात् गुरुदेवश्री के मांगलिक प्रवचन का लाभ मिला। इसके पश्चात् श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पंचकल्याणक की रूपरेखा का विस्तृत परिचय सभा को दिया।

इसी प्रसंग पर शिल्पकारों का सम्मान करते हुये उन्हें प्रतिमा निर्माण में शुद्धता रखने हेतु आवश्यक प्रतिज्ञायें दिलायी गयी। तत्पश्चात् पाषाणशुद्धि का कार्य संपन्न हुआ। इसके अन्तर्गत सभी विद्वानों के अतिरिक्त श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई, श्रीमती कनकबेन अनंतभाई सेठ, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ, श्री राजकुमारजी टोंग्या जयपुर, श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, युवा फैडरेशन जयपुर महानगर व वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल के सभी सदस्यों व ब्र. बहनों द्वारा पाषाण शुद्धि की गई।

शोक समाचार

1. इन्दौर (म.प्र.) निवासी डॉ. राजेशजी जैन का दिनांक 12 मई को 74 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप इन्दौर के वरिष्ठ चिकित्सक थे। आपके निधन से इन्दौर जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई।

ज्ञातव्य है कि आप श्री मुकेशजी जैन (ढाईद्वीप जिनायतन) इन्दौर के पिताजी थे। आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों के परम सहयोगी थे।

2. मुम्बई निवासी श्रीमती इन्दिराबेन दोशी का दिनांक 12 मई को 82 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के संरक्षक थे।

3. उज्जैन निवासी श्रीमती इन्दिरादेवी झांझरी का दिनांक 12 मई को 68 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं।

ज्ञातव्य है कि आप पं.विमलदादा झांझरी की धर्मपत्नी थीं।

4. जयपुर निवासी श्री स्वरूपचंदजी जैन का दिनांक 11 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। टोडरमल स्मारक भवन में चलने वाले स्वाध्याय के आप दैनिक श्रोता थे।

5. जयपुर निवासी श्री ज्ञानचंदजी खिन्दूका का दिनांक 7 मई को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप तीर्थक्षेत्रों, शास्त्रों व संस्कृति के विकास हेतु सदैव तत्पर रहे। आप अनेक धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक संस्थाओं से सक्रियता से जुड़े रहे। आपके चिर वियोग से जयपुर जैन समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 2100-2100/- रुपये प्राप्त हुये।

6. भगवाँ निवासी श्री मोतीलालजी जैन का दिनांक 21 अप्रैल को 78 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप गहरे तत्त्वाभ्यासी और तत्त्वरसिक थे। ज्ञातव्य है कि आप तीर्थधाम सिद्धायतन के उपाध्यक्ष थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक अनुराग जैन के दादाजी थे।

7. बड़ौत (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सुमित्रादेवी जैन ध.प. श्री रोशनलालजी जैन का दिनांक 18 मई को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ध्रुवफण्ड हेतु 5000/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

संकल्प दिवस के रूप में...

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 77वें जन्मदिवस के अवसर पर स्नातक परिषद् के सदस्यों द्वारा आयोजित अभिनन्दन सभा में परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्नातक परिषद् को यह दिन संकल्प दिवस के रूप में मनाना चाहिये। जो भी स्नातक इस अभियान में नये आवें, वे इस दिन तत्त्वप्रचार का संकल्प करें।

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर कोलारस में आयोजित डॉ. भारिल्ल के हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर उनके स्नातक शिष्यों ने उन्हीं के जैसा आजीवन तत्त्वप्रचार करने का संकल्प लिया था। इस संकल्प को उनके स्नातकों ने पुन: दोहराया और लगभग 78 नये स्नातकों ने भी इस संकल्प में बद्ध होकर तत्त्वज्ञान के आजीवन प्रचार-प्रसार की शपथ ली।

पंचकल्याण

क विज्ञापन

कृतज्ञता

तत्त्वप्रचार को समर्पित जीवनशैली एवं सैंकड़ों शास्त्रियों के जीवनशिल्पी डॉ. हुकमचंद भारिल्ल आज मुमुक्षु समाज के साथ–साथ जनसामान्य के भी प्रेम भाजन बनते जा रहे हैं। उन्होंने जिस तेजी से स्नातक विद्वानों की फौज तैयार की है और जिनवाणी को लाखों की संख्या में घर–घर पहुँचाया है, वह अपने आप में चमत्कार है।

यह तो आपको विदित ही है कि डॉ. भारिल्ल ने तत्त्वप्रचार के लिए जो भी संसाधन अपनाए, वह परवर्ती प्रचारकों के लिए आदर्श बनते गये, चाहे वह शिविरों की श्रृंखला हो या विद्यालय की परिकल्पना या फिर मासिक–पाक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन, वे सभी साधन न केवल मुमुक्षु समाज ने अपनाये बल्कि.....।

डॉ. भारिल्ल ने तत्त्वप्रचार के जीवनकाल में जो एक बेजोड़ काम किया, वह यह है कि गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान को एक पंथ विशेष के रूप में उभरने से रोकने का भरपूर प्रयास और गुरुदेवश्री को दिगम्बर परम्परा की मूल धारा से जोड़े रखना, फिर भले ही इसके लिए उन्हें संकीर्ण समालोचकों की आलोचना भी क्यों न सहनी पड़ी हो।

आज डॉ. भारिल्ल ने गुरुदेवश्री के नाम पर भले ही कोई न दिखने वाला स्मारक न बनाया हो; लेकिन श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के माध्यम से सैंकड़ों हृदयों में गुरुदेवश्री के प्रति जो आस्था उत्पन्न की, वह पीढी दर पीढी चलती रहेगी। वह किसी स्मारक से कम कैसे आंकी जा सकती है ? उनके इस प्रयास से आज टोडरमल स्मारक न केवल टोडरमलजी की याद दिलाता है; बल्कि वह तत्त्वप्रचार की परम्परा का जीता जागता उदाहरण बन गया है। हम उसे कानजीस्वामी स्मारक, बनारसीदास स्मारक, कुन्दकुन्द स्मारक और महावीर स्मारक भी कह सकते हैं। संक्षेप में कहूँ तो पर अपर गुरु से लेकर हमारे गुरु पर्यन्त सभी ज्ञानियों की दास्तां है टोडरमल स्मारक। मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मेरे जैसे अनेक विद्यार्थियों ने कानजी स्वामी को देखा भी न होगा, फिर भी उनके हृदय में झांक कर देखेंगे तो कानजीस्वामी के स्पष्ट दर्शन होंगे। ये चमत्कार इस विद्यालय का है और ये चमत्कार इसको चलाने वाली टीम और इन सबके मार्गदर्शक डॉ. भारिल्ल का है।

ये परम सत्य है कि वर्तमान तत्त्वक्रान्ति में गुरुदेवश्री का योगदान महत्वपूर्ण है; तथापि हम शास्त्रियों के जन्मदाता तो डॉ. भारिल्ल ही हैं या यों कहें कि हमको गुरुदेवश्री तक ले जाने वाले डॉ. भारिल्ल ही हैं, हमारे प्रत्यक्ष गुरु तो डॉ. भारिल्ल ही हैं; अत: उनका उपकार कैसे भुलाया जा सकता है ? जिस प्रकार नि:संदेह हमारे दादाजी नहीं होते तो पिताजी कैसे होते; तथापि वर्तमान पिताजी की उपेक्षापूर्वक स्वर्गीय दादाजी का सम्मान शक्य नहीं है।

अत: डॉ. भारिल्ल आदि के प्रति कृतज्ञ होना स्वाभाविक है/नैतिक है; क्योंकि पूज्य गुरुदेवश्री की ये पंक्तियाँ कि ''चमड़ा उतारकर जूते बनवा दे, तथापि जिस उपकार का बदला न दिया जा सके, ऐसा उपकार गुरु आदि का होता है, उसके बदले जो उपकार का लोप करे, वह तो अनंत संसारी है।''

उनकी कार्यशैली की विशेषता यह है कि वे तत्त्व बांटते समय यह विचार नहीं करते हैं कि तत्त्व लेने वाला कौन है, किस समुदाय से ताल्लुक रखता है अथवा किस जाति का है; शायद उनकी यही उदारता सीमित दायरे में काम करने वालों को पसंद नहीं आई। लेकिन भाई ! बात पसंद–नापसंद की नहीं है, बात है तत्त्वप्रचार की, वो भी हर कीमत पर। हिन्दी की इस कहावत के अनुसार नहीं कि ''अंधा बांटे रेवड़ी चीन चीन के दे'' हमको कोई अधिकार नहीं है कि किसी को तत्त्व से वंचित रखा जाए, वो भी सिर्फ इसलिये कि वो किसी विशेष खेमे का है।

(शेष पृष्ठ 11 पर...)

लोनावाला प्रकरण के संबंध में

(विगत 2 माह से मुमुक्षु समाज में लोनावाला प्रकरण को लेकर पत्राचार, पम्पलेट, एस.एम.एस. एवं ई–मेल आदि के माध्यम से बन रहे अशान्त वातावरण को शान्तिप्रिय मुमुक्षु समाज में शांति बनाये रखने की भावना से लोनावाला प्रकरण को पूर्ण विराम देने हेतु हमारे पास पूरे देश के मुमुक्षु बन्धुओं की ओर से लिखित में सैंकड़ों सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। स्थानाभाव के कारण सभी को यहाँ प्रकाशित किया जाना संभव नहीं है; मुमुक्षु समाज की एकता, अखण्डता एवं संगठन की भावना को लक्ष्य में रखकर हम यहाँ कुछ सम्मतियाँ प्रकाशित कर रहे हैं। - सह सम्पादक)

1. आदरणीय डॉ. भारिल्ल साहब, आदरणीय श्री पवनभाईजी, आदरणीय श्री अनंतमामा, आदरणीय श्री अजितभाई जैन!

आपने मुमुक्षु समाज की एकता के लिए बहुत अच्छा कार्य किया है। अन्त में सब शांतिपूर्ण रहे यह महत्वपूर्ण बात है।

मैं विश्वास करता हूँ कि इस प्रयास का एकमात्र उद्देश्य कुन्दकुन्द कहान के तत्त्वज्ञान का प्रचार–प्रसार करना ही है। यदि मुमुक्षु समाज के कुछ लोग अलग दृष्टिकोण रखते हैं तो उसे बदलना सामान्य है। जब तक हम कोशिश नहीं करेंगे, तब तक हम नहीं जानेंगे। मैं व्यक्तिगत रूप से सोचता हूँ कि यह एक सद्भावपूर्वक की गई कोशिश है। किसी भी परिस्थिति में एक बुद्धिमान व्यक्ति सीखेगा और अपने अनुभवों से सीखता हुआ आगे बढता रहेगा। यदि हम नये कार्य नहीं करेंगे तो गलतियाँ भी नहीं करेंगे। हम सभी अपनी गलतियों से सीखते हैं और इसी से अनुभव आता है तथा यही अनुभव व्यक्ति को बुद्धिमान बनाता है।

इस कठिन समय में शीर्षस्थ लोगों ने सही निर्णय लिया है। हम सभी भूतकाल को भूलें और भविष्य को देखें।

कुन्दकुन्द कहान तत्त्वज्ञान का भविष्य उज्ज्वल है। हम सभी साथ मिलकर कार्य करें और सही दिशा में अपनी ऊर्जा लगायें। यही गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति हमारी श्रद्धांजलि होगी।

व्यर्थ की बातों के बारे में सोचने और अपनी कीमती ऊर्जा को इन पर खर्च करने के लिए यह जीवन बहुत छोटा है।

मुझे विश्वास है कि मुमुक्षु समाज एक बार फिर कंधे से कंधा मिलाकर अगली पीढी का भविष्य बनाने के लिए कार्य करेगा। हम सभी अपने बच्चों, पोतों एवं आगे की पीढी का भविष्य बनाने के लिये साथ मिलकर कार्य करें। इस कार्य के लिये एक बार फिर बधाई ! **– डॉ. किरीट गोसालिया,**

फिनिक्स, अरिजोना, यू.एस.ए. 602 316 5077

2. आदरणीय पवनजी, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, अनंतभाई और अजितभाई जैन, सादर जय जिनेन्द्र !

लोनावाला मंदिर में हुए घटनाक्रम के बारे में हमने लंदन में सुना। डॉ. भारिल्ल व उनके साथ उपस्थित व्यक्तियों की मीटिंग में हुई सहमति पूरी दुनिया में मुमुक्षु समाज की एकता को बनाये रखने के लिये उपयुक्त है।

डॉ. भारिल्ल अमेरिका और भारत में भ्रमण करते हैं, जहाँ जैनधर्म के सभी सम्प्रदायों में उनके श्रोता हैं। उन्होंने आचार्य कुन्दकुन्द, अन्य समकालीन आचार्यों, ज्ञानी विद्वानों द्वारा लिखित और गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा प्रचारित सच्चे तत्त्वज्ञान के सद्भावपूर्वक प्रचार–प्रसार हेतु कार्य किया है।

लेकिन हमारे मुमुक्षु विद्वानों द्वारा कही गई बात शुद्ध तेरापंथ दि.आम्नाय को बनाये रखने की है और श्वेताम्बर और दिगम्बर तीर्थंकरों की प्रतिमा एक ही वेदी पर या एक ही गर्भगृह में नहीं होनी चाहिये, क्योंकि इससे शुद्ध तेरापंथ आम्नाय की पवित्रता खण्डित होती है एवं दर्शन पूजन के समय मुमुक्षु श्वेताम्बर प्रतिमा के दर्शन से अछूते नहीं रह पायेंगे।

गुरुदेवश्री ने आदरणीय डॉ. भारिल्ल की खुले रूप में प्रशंसा की है। डॉ. भारिल्ल ने गुरुदेवश्री की शिक्षाओं को सतर्क व सूक्ष्म अर्थ सहित समझने व समझाने का कार्य किया है। इस विवाद को निपटाने के लिए मैं बधाई देता हूँ।

– जयन्ती भाई गुटखा, अध्यक्ष–श्री दि.जैन एसोसिएशन, लन्दन

3. आदरणीय डॉ. भारिल्ल, अनंत मामा, अजितजी एवं पवनजी, सादर जयजिनेन्द्र !

भूतकालीन अनुभवों से व्यक्ति मजबूत बनता है। इस नाजुक मामले को निपटाने एवं मुमुक्षु समाज के टुकड़े होने से बचाने के लिए हम आप सबको बधाई देते हैं। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है कि आप भगवान महावीरस्वामी, कुन्दकुन्दाचार्य, पण्डित टोडरमलजी और पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा बताए सच्चे तत्त्वज्ञान पर चलकर इस मामले को निपटाने में समर्थ हुये।

यदि हम सभी उनके सिद्धांतों का पालन करें, तो हमारे समाज की एकता हमेशा बनी रहेगी। आपके इन महान प्रयासों के लिए आपको हार्दिक बधाई। **– विजन शीतल शाह, लन्दन**

4. सामाजिक एकता तथा पू. गुरुदेवश्री की धार्मिक रीति–नीति अनुसार, लोनावाला स्थित जिनप्रतिमा का शुद्धाम्नाय से प्रक्षाल पूजन व अन्य गतिविधियाँ संचालित होगी। यह जानकर हमें असीम आनन्द की अनुभूति हुई। आशा है, अब सभी मुमुक्षु भाईयों की सभी शंकाओं का समाधान होगा। सभी मुमुक्षु भाई तत्त्वप्रचार में अधिक उत्साह से सम्मिलित होंगे।

– मुकेश जैन, मैनेजिंग ट्रस्टी

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट (रजि.) इन्दौर (म.प्र.)

5. दिशा बोधक समाधान –'अब लोनावाला प्रकरण को पूर्ण विराम दें' के नाम से एक अपील सर्व श्री डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, अनन्तराय ए. सेठ, पवन जैन एवं अजित जैन के नाम से प्रकाशित हुई। अपील की विषयवस्तु पढ़कर मन को संतोष हुआ। आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजीस्वामी ने जाति/पंथ आदि की संकीर्णताओं का परित्याग कर मानव जगत के कल्याण अर्थात् स्वाधीनता से स्वतंत्रता का जो मार्ग दर्शाया था वह सभी महानुभावों के लिए बिना किसी अवरोध के खुला है। इसी क्रम में श्री दिनेशभाई मुम्बई ने अपनी मूलाम्नाय की भावना के प्रकाश में लोनावाला में दिगम्बर मूर्ति स्थापित की, उसका स्वागत किया जाना चाहिये था। ऐसे प्रयोग पहले भी हुये हैं ह्न जैसे न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली जहाँ एक ही वेदी पर दिगम्बर श्वेताम्बर प्रतिमायें एवं शास्त्र विराजमान हैं। जहाँ कहीं किसी को सुझाव देना आवश्यक प्रतीत होता, तो उसका सुझाव देकर किसी चूक आदि का शुद्धिकरण कराया जा सकता था/है। दशाब्दियों तक तत्त्व की चर्चा करने के उपरांत भी यह सदाशयता भाई श्री धन्यकुमारजी बेलोकर में उत्पन्न हुई, अनुभव में नहीं आयी। उन्होंने मनोविकारों के उद्रेक में गर्भित उद्देश्य हेतु मुमुक्षु समाज को दिग्भ्रमित करने वाली व्यय–साध्य अपील प्रकाशित की और कल्पित आरोप लगाये, जो दुःखद है।

प्रमोद की बात है कि उक्त अपीलकर्त्ताओं ने व्यापक दृष्टिकोण अपनाकर प्रकरण को विराम देने एवं मुमुक्षु समाज में एकता कायम रखने हेतु समाधान कारक प्रयास किया जो न केवल मुमुक्षु समाज किन्तु सर्व जैन समाज द्वारा स्वागत किया जाना चाहिये। क्योंकि इसमें सामाजिक समस्याओं के समाधान के सूत्र अन्तर्निहित है।

यह उल्लेखनीय है कि जैसी तत्परता उक्त प्रकरण का लाभ लेने में भाई श्री बेलोकरजी ने दिखाई, ऐसी ही तत्परता उन्हें पूज्य कुन्दकुन्द देव के गुरु जिनचन्द्र को जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष में भाग–1 (द्वितीय संस्करण) में गुरु का हत्यारा सिद्ध किये जाने के प्रकाशन के विरोध में दिखानी चाहिये थी, वह उन्होंने नहीं दिखाई। इससे यह ध्वनित होता है कि लोनावाला प्रकरण को उछालने का उनका मूल उद्देश्य जैन संस्कृति, आचार्य परम्परा एवं मुमुक्षु समाज की एकता न होकर कुछ और ही था, जिस कारण इस प्रकरण को इतना तूल देकर समाज को विभ्रमित किया। विश्वास है कि भविष्य में ऐसी घटनाओं को विराम मिलेगा। विरोधियों की तर्ज पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का स्तरहीन विरोध अत्यन्त अशोभनीय एवं अवांछनीय है। विरोध प्रदर्शन में शालीनता एवं तथ्यों की प्रामाणिकता का ध्यान रखना आवश्यक है, जो विद्यमान प्रकरण में दिखाई नहीं देता है। **– डॉ. राजेन्द्र बंसल, अमलाई**

मंत्री– अखिल भारतवर्षीय दिग. जैन विद्वत्परिषद

6. लोनावाला प्रकरण को पूर्ण विराम देने के लिए डॉ. भारिल्ल, अनन्तभाई, पवनजी एवं अजितजी, बड़ौदा ने जो समाधान निकाला है; उससे समाज को संगठित रखने में सफलता मिलेगी। उनके इस सत्प्रयास के लिए मुमुक्षु समाज आभारी है। **– विपिन जैन शास्त्री**

चिरंतन ज्वैलर्स, नागपुर

7. लोनावाला प्रकरण को पूर्ण विराम दें यह निवेदन समाज की एकता को ध्यान में रखकर उठाया गया एक सराहनीय कदम है। इससे अनावश्यक बातों को विराम मिलेगा। सभी परस्पर स्नेहपूर्वक कार्य करें, समाज का हित इसी बात में है। आप सबने मिलकर यह जो सर्वसमाधान कारक रास्ता निकाला है; इसके लिए बहुत–बहुत साधुवाद!

– मा. चन्द्रभान जैन, तीर्थधाम सिद्धायतन, द्रोणगिरि (म.प्र.)

8. लोनावाला प्रकरण से एक प्रश्न मन में उठा, क्या भगवान महावीर और गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने जो तत्त्वज्ञान या उपदेश दिया; वह एक वर्ग विशेष के लिए दिया या प्राणी मात्र के लिए ?

गुरुदेव के अनुयायी तथाकथित लोग ही उनकी रीति–नीति पर नहीं चल रहे। यह देख मन को खेद हुआ। जहाँ गुरुदेव कहा करते थे – ''भुलेला भगवान छै'' वहाँ उन्हीं के तथाकथित अनुयायी पर्चेबाजी तथा तरह–तरह के इसीप्रकार के प्रपंच करने में व्यस्त हैं। अगर कोई समाज या वर्ग वीतरागी धर्म, गुरु, शास्त्र को तथा वीतरागी मुद्रा को समझना चाहता है तो इसमें क्या दोष? प्रकरण का सुबह समाधान हो गया है – यह बहुत अच्छी बात है। सभी को साधुवाद तथा कामना के साथ आशा करता हूँ कि हम सब हिल–मिल कर आत्मचिन्तन करते हुए तत्त्वप्रचार तथा आत्मानुभूति का मार्ग

प्रशस्त करते हुये जिनधर्म तथा वीतरागी मार्ग तथा वीतरागी मुद्रा का प्रचार जन-जन तथा घर-घर तक पहुँचा कर अपना यह भव सार्थक करें!

– मनोजकुमार जैन (चीनीवाले)

59, जैन मिलन विहार, जानसठ रोड़, नई मण्डी मुजफ्फर नगर

9. आदरणीय डॉ. साहब के निमित्त से लोनावाला (मुम्बई) महाराष्ट्र में जो वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई; वह तो ऐसा कार्य है कि जैसे पू. गुरुदेव श्री श्वेताम्बर मत से दिगम्बर मत में आये वैसे ही श्वेताम्बर मन्दिर में दिगम्बर प्रतिमा विराजमान करना है। जबकि उसके व्यवस्थापकों ने पूजा आदि सारे कार्य दिगम्बर पद्धति से करने का वचन दिया है; इसमें ऐसा कौन सा भयंकर अपराध हो गया कि जिसको इतना तूल दिया जा रहा है।

आदरणीय डॉ. साहब के द्वारा हो रही धर्म प्रभावना को गौण करके उसमें गलती निकालना उसमें बाधक बनना है। मैं तो डंके की चोट कहूँगा कि आज डॉ. साहब के समान पू. गुरुदेव श्री द्वारा उद्घाटित तत्त्व का प्रचार-प्रसार कौन कर रहा है ? **– कमलचन्द जैन, अध्यापक**

श्री दि. जैन आदिनाथ चैत्यालय, पिड़ावा, (राज.)

10. भारतीय परम्परा में धर्म और दर्शन एक दूसरे से अन्तःसम्बद्ध हैं। यही अन्तःसम्बद्धता मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य और नैतिक आचरण से सम्बन्ध रखती है। कालचक्र के प्रवाह में लौकिक मूल्यों और अध्यात्मिक मूल्यों में उतार-चढ़ाव के साथ कुछ अन्तर विरोध की स्थितियाँ भी निर्मित होती रहती हैं। सूक्ष्म आध्यात्मिक साधनायें और विचारधारायें बाह्य आडंबर और धर्म की मिथ्या अभिव्यक्तियों से आच्छन्न हो जाती हैं और आध्यात्मिकता की अतिवादी शक्तियाँ मनुष्य जीवन को अकर्मण्य बनाकर उसकी प्रगति के पथ को अवरुद्ध कर देती हैं। जैन दर्शन की विशेषता ही यही है कि संसार की सभी आत्मायें भगवान है। सभी जीव गुरुदेवश्री के बताये गये उपदेशों के द्वारा सम्यक पुरुषार्थ करे; दुःखों से मुक्ति का उपाय प्राप्त करें व सुखी हों मोक्ष को प्राप्त करें।

डॉ. भारिल्लजी का निःस्वार्थ भाव और पवित्र हृदय से सही दिशा में किया गया यह एक सतत् प्रयास था; परन्तु इस प्रयास ने मुमुक्षु समाज में ही एक अर्न्तद्वन्द पैदा कर दिया है। धर्मपरम्परा नहीं, स्वपरीक्षित साधना है। विवेकी जन यथासंभव संघर्ष को टालने में ही अपनी जीत समझते हैं, उलझने में नहीं। संघर्ष ज्ञान से नहीं कषाय से चलता है। अतः मेरा मुमुक्षु समाज से निवेदन है कि इस संघर्ष को विराम देते हुए पूज्य गुरुदेवश्री की रीति-नीति पर ही चलते हुये पुनः कटुता समाप्त करते हुये पूर्व की भाँति एकता, अखण्डता व आपसी प्रेम का परिचय देते हुये अपनी आत्मशुद्धि एवं आत्मआराधना में लग जायें। **– डॉ. शिवकान्त जैन 'शुद्धात्म'**

क्षेत्रीय उपाध्यक्ष, भारतीय जैन मिलन, जसवन्तनगर, इटावा, मो.: 9045121225

11. लोनावाला घटना का सुखद समाधान जानकर आप सबके प्रयत्नों को खूब-खूब धन्यवाद! भविष्य में कोई भी समस्या का समाधान इसी प्रकार आपस में चर्चा-वार्ता द्वारा करने का यह उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। हरेक मुमुक्षु को समाज संगठित बनाने के लिए इसप्रकार सकारात्मक रीति-नीति बनाई जाए। **– दिलीप भाई शाह,** मुम्बई/जयपुर मो. : 7665020304

12. सांच को आंच नहीं - जिन शासन जयवंत हो! लोनावाला प्रकरण पर पं. धन्यकुमारजी की छपी प्रतिक्रिया पढ़कर दुःख हुआ कि हम चींटी पर तो दया करते हैं, परन्तु हाथी की हिंसा में हमें पाप भी नजर नहीं आता; प्रभु यह क्या है? सभी आत्मायें (अन्य धर्मी भी) धर्माधिकारी हैं। जिनवाणी सुधा पियें ऐसी समरस भावना ज्ञानी के हृदय में बहती रहती हैं।

अरे रे..! क्षमावाणी मात्र वाणी तक सीमित क्यों रह गई प्रभु ! जरा सोचें गौतम गणधर ब्राह्मण वेश में शिष्यों के साथ वीर प्रभु के समवशरण सभा में प्रवेश करते तो क्या धर्मसभा के व्यवस्थापक को उन विद्यार्थियों को धर्मसभा में सादर प्रवेश देना चाहिये या नहीं ?

जिनका जीवन जिनवाणी को समर्पित है; उनको जिनवाणी पढ़ने व पढ़ाने का अधिकार नहीं है - ऐसा विचार आना पत्र छापना किस गति का परिणाम है, प्रबुद्ध वर्ग विचार करें? मेरे किसी शत्रु को भी जिनवचनों से वियोग न हो। यह लोनावाला प्रकरण को पूर्ण विराम इस निवेदन से तो अब सबको समाधान/हर्ष/शान्ति होना ही चाहिए। **– विवेक शास्त्री,** सागर

13. लोनावाला स्थित जिनमन्दिर में स्थापित आदिनाथ स्वामी के दिगम्बर जिनबिम्ब के प्रकरण के सन्दर्भ में हमें यह कहना है कि डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल मुम्बई में अध्यात्म स्टडी सर्किल की ओर से आयोजित श्वेताम्बर पर्यूषण के समय मात्र प्रवचन करने जाते रहे हैं। वह भी इस पवित्र उद्देश्य एवं भावना से कि दिगम्बराचार्यों द्वारा लिखित ग्रन्थों में धर्म का जो मर्म है, जिसका रहस्योद्घाटन वर्तमान युग के युगप्रवर्तक पू. गुरुदेव कानजीस्वामी ने जीवन पर्यन्त किया, वह तत्त्व जन-जन तक पहुँचे और सभी जीव सत्धर्म समझकर अपना आत्मकल्याण कर सकें। डॉ. साहब ने कभी किसी से यह नहीं कहा कि वे अपना मत छोड़कर दिगम्बर जैनधर्म अपनाएँ, दिगम्बर जिनमन्दिर बनवाएँ उसमें दिगम्बर जिनबिम्ब पधरवाए।

लेकिन जैसा कि जैनपथप्रदर्शक 17 मई 2011 के अंक के मुख पृष्ठ तथा पीछे के पृष्ठ पर छपे समस्त आलेख उसमें भी विशेष दिनेश जैन मोदी एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट मुम्बई के आलेख से अत्यन्त स्पष्ट है कि यह सब 28-29 वर्षों से निरन्तर अध्यात्म स्टडी सर्किल के माध्यम से अध्यात्म का रसपान करने वाले श्रोताओं के अन्तरंग धार्मिक क्रान्ति का ही प्रतिफल है।

वास्तव में तो डॉ. साहब अपनी उस प्रतिज्ञा के प्रति दृढ़ संकल्पित हैं जो कि उन्होंने स्व. बाबूभाई मेहता फतेहपुर वालों के साथ पूज्य स्वामीजी के देहावसान के बाद उनकी जलती हुई चिता के सामने की थी कि 'मैं जीवन पर्यन्त स्वामीजी के द्वारा प्रदत्त तत्त्व का प्रचार-प्रसार करता रहूँगा।' डॉ. साहब के सम्पूर्ण जीवन का सिंहावलोकन करें तो उनकी प्रत्येक गतिविधि के पीछे मात्र यही पवित्र उद्देश्य एवं भावना रही है।

डॉ. साहब की निन्दा एवं उनका अपमान करना न केवल मुमुक्षुओं को सतधर्म से वंचित कर उनका मोक्षमार्ग अनन्त भव तक अवरुद्ध करने का पाप है; अपितु वे जिनके विश्वसनीय शिष्य है उनकी अन्तिम भावना को कुचलने का महा दुस्साहस है। पू. स्वामीजी की अन्तिम भावना के सन्दर्भ में जो संस्मरण है, वह इस प्रकार है - बात है पूज्य स्वामीजी के स्वर्गवास के कुछ माह पूर्व सन् 1980 की। 'एक बार गुरुदेवश्री कुछ गम्भीर होकर अपने पास में रह रहे भाई श्री शान्तिलालजी राजकोट वालों से बोले - 'जो तत्त्व की अविरल धारा अभी चल रही है, वह जब तक 50-60 वर्ष जब तक पं. हुकमचन्दजी हैं तब तक चलती रहेगी, इसके

बाद लुप्त हो जाएगी।' इस पर राजकोट वाले भाई बोले - 'गुरुदेवश्री डॉ. भारिल्ल और उनके बड़े भाई पं. रतनचन्द भारिल्ल ने जयपुर में जैनागम के मर्मज्ञ विद्वान बनाने का विद्यालय खोला है। उसके माध्यम से आपके द्वारा जो जिनागम का रहस्य उद्घाटित हुआ है, वह तत्त्व की धारा सदियों-सदियों तक चलती रहेगी। ऐसा सुनते ही स्वामीजी के चेहरे पर निश्चितन्तता एवं संतोष के भाव झलक उठे। स्वामीजी को डॉ. साहब के ऊपर जितना विश्वास था उससे भी कई गुना अधिक स्वामीजी के स्वप्नों को वे साकार कर रहे हैं। सच्चे अर्थों में गुरु के उपकार का ऋण कैसे चुकाया जाए इसके लिए युगों-युगों तक डॉ. साहब आदर्श रहेंगे।

आश्चर्य एवं खेद का विषय तो यह है कि उन्हीं गुरु के प्रत्यक्षदर्शी श्रोता व शिष्य होकर कतिपय व्यक्तियों द्वारा जिस घटना को सच्चे तथा आदर्श रूप में लेकर अनेक जीवों को दिगम्बर धर्मानुयायी बनाने में निमित्त बनना था, वे ही गलतरूप से घटना को प्रस्तुत करके अनेक जीवों को सत्धर्म से भ्रष्ट करने में क्यों निमित्त बन रहे हैं? क्या होगा इन परिणामों का फल? विचारें !

मुझे ऐसा विश्वास है कि गुरुदेव का अनुयायी प्रत्येक मुमुक्षु विवेकी एवं स्वपर कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। घटना की सत्यता को समझकर अपने अन्दर चलने वाले अन्तर्द्वन्द को समाप्त कर, आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगे। **- डॉ. कमलश्री नायक** 12, मउणाना, ललितपुर (उ.प्र.)

14. आदरणीय दादाजी ने समन्वय के पांच सूत्रों में एक सूत्र दिया था कि जिन बातों में हमारे बीच असहमति है, उन्हें गौण करके हमें तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में भरपूर सहयोग देना चाहिये। इस प्रकरण को तूल देने में हमने जो शक्ति और साधनों का दुरुपयोग किया है, यदि उसका प्रयोग तत्त्वज्ञान के प्रचार में किया जाता तो अपूर्व उपलब्धि होती। **- संजय शास्त्री**
(संयोजक - सर्वोदय अहिंसा, जयपुर)

15. हमारा ट्रस्ट प्रारम्भ से ही यह प्रयास कर रहा था कि शान्त, सौम्य एवं ज्ञानी मुमुक्षु समाज में किसी प्रकार की विचारधारा को लेकर विघटन न हो। पूज्य गुरुदेवश्री के द्वारा रोपित एवं पल्लवित मुमुक्षु समाज रूपी वृक्षअब वटवृक्ष में परिवर्तित हो चुका है। आज विश्व का जैन समाज मुमुक्षु समाज को ज्ञान से परिपूर्ण अनुशासित समाज मानता है। हम सभी लोनावाला प्रकरण के शान्तिपूर्ण पटाक्षेप होने पर सभी मुमुक्षु श्रेष्ठीजनों को साधुवाद प्रेषित करते हैं तथा यह मंगल कामना करते हैं कि जिनवाणी का प्रचार एवं प्रसार अबाधगति से निरन्तर चलता रहे। इसी मंगल भावना के साथ - **- अशोक जैन** (सुभाष ट्रान्सपोर्ट)
अध्यक्ष, श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, कुंदकुद कहान तीर्थ, दीवानगंज

पोस्टर विमोचन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 16 मई को सर्वोदय अहिंसा अभियान के अन्तर्गत अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा एक पोस्टर का विमोचन किया गया, जिसके अन्तर्गत पानी बचाने का सन्देश दिया गया है।

पोस्टर का विमोचन माननीय अशोकजी गहलोत (मुख्यमंत्री-राजस्थान सरकार) ने किया। साथ ही उन्होंने इस कार्य के प्रति हर्ष व्यक्त करते हुए सराहना की। यह पोस्टर पूरे राजस्थान के साथ-साथ देश के अन्य प्रमुख शहरों में भी भेजा जा रहा है। **- संजय शास्त्री (संयोजक)**

डॉ. भारिल्ल एक प्रामाणिक लेखक हैं

- आचार्य विद्यानन्द मुनि

''धर्मानुरागी डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जैन अध्यात्म एवं तत्त्वज्ञान के ठोस ज्ञाता एवं कुशल वक्ता तो हैं ही, एक प्रामाणिक लेखक भी हैं। अभी मैंने उनकी 'मोक्षमार्गप्रकाशक' की प्रस्तावना पढी तो मुझे लगा कि उन्होंने बड़ी ही पांडित्यपूर्ण एवं प्रांजल भाषा में जो कुछ लिखा है, बड़ा ही प्रामाणिक लिखा है। पण्डित टोडरमलजी की ही तरह उनका भी शास्त्र-लेखन पर बड़ा अधिकार है। सारी समाज को उन्हें ध्यानपूर्वक सुनना एवं पढना चाहिये।

पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक की रचना कर बहुत महान कार्य किया है, वे सचमुच आचार्यकल्प थे। यदि यही ग्रन्थ किसी आचार्य मुनिराज ने लिखा होता तो आज इसे सब लोग सिर पर रखकर नाचते।

उक्त उद्गार आज यहाँ कालकाजी में अ.भा.जैन परिषद द्वारा आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने व्यक्त किये। आचार्यश्री ने समयसार पर प्रवचन करते हुए सभी को समयसार के अध्ययन-मनन की प्रेरणा दी और कहा कि जिनवाणी का सार ही समयसार है। मैं तो अब हमेशा केवल समयसार को ही पढता रहता हूँ, बाकी अन्य सभी ग्रन्थों को तो उसी का सहायक ग्रन्थ मानकर कभी-कभी पढता हूँ। उपाध्याय प्रज्ञासागरजी एवं क्षुल्लक विभंजनसागरजी ने भी समयसार पर संक्षिप्त प्रवचन किये।

इस अवसर पर यहाँ प्रात: एवं सायं दोनों समय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के स्वरूप एवं महत्व पर बड़े ही सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान हुये, जिससे सभी को अपूर्व ज्ञान एवं आनन्द प्राप्त हुआ। दिल्ली जैन समाज के अध्यक्ष श्री चक्रेशजी जैन एवं पंचकल्याणक समिति के स्वागताध्यक्ष श्री शीलजी जैन ने डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण एवं उत्तरीय द्वारा स्वागत किया।

डॉ. वीरसागरजी जैन ने समाज में मैत्री एवं समन्वय का वातावरण बनाने की सभी से हार्दिक अपील की। **- अखिल बंसल**

(पृष्ठ 8 का शेष...)

मुमुक्षु समाज का निर्माण उन सभी बंधुओं से मिलकर हुआ है, जो पहले किसी न किसी समुदाय विशेष से थे, बाद में परिवर्तन हुआ और यह प्रक्रिया विद्यालय के रूप में आज भी चालू है, वहाँ आने वाले अधिकांश विद्यार्थी मुमुक्षु वर्ग से नहीं आते हैं; लेकिन तत्त्वज्ञान के लाभ से सहज रूप में मुमुक्षु समाज के अभिन्न अंग बन जाते हैं और मुमुक्षु समाज का कुशल नेतृत्व भी करते हैं, अत: जो लोग मुमुक्षु समाज की वृद्धि चाहते हैं, उन्हें इस प्रक्रिया का तन-मन-धन से समर्थन करना चाहिये।

दूसरी बात सत्साहित्य का निर्माण भी इस प्रक्रिया का प्रबल सहयोगी अंग है। कुछ लोग नवीन साहित्य रचना में अरुचि रखते हैं। उनका तर्क है कि पहले ही इतने शास्त्र हैं तो फिर नये शास्त्रों की क्या आवश्यकता है ? वे ये बात भूल जाते हैं कि ये विचार यदि टोडरमलजी को या अन्य किसी लेखक को आया होता तो क्या होता ? भाई नये साहित्य की आवश्यकता देश काल की भाषा परिवर्तन के कारण हमेशा बनी रहती है। जिस प्रकार विषय पोषण के लिए हर रोज नयी फिल्में बनती रहती हैं, उसीप्रकार ज्ञान-वैराग्य पोषण के लिए साहित्य निर्माण भी नवीन आवश्यक है।

अत: तत्त्वप्रचार के इन दो संसाधनों (विद्यालय, साहित्य निर्माण) के लिये हमें तन-मन-धन से सहयोग देकर प्राणी मात्र के कल्याण में निमित्त बनना चाहिये।
- विपिन जैन शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य, चिरंतन ज्वैल्स, नागपुर, 9860140111

2 जून 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का –

33वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

जयपुर (राज.): यहाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के दौरान दिनांक 22 मई, 2011 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 33वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

सभा की अध्यक्षता फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री अजितप्रसादजी जैन, दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कान्तिलालजी बड़जात्या रतलाम मंचासीन थे। विद्वानों एवं फैडरेशन के पदाधिकारियों के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री पुष्पेन्द्रजी भिण्ड, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा, पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया आदि महानुभाव मंचासीन थे।

फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने संस्था की उपलब्धी एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुये बालकों एवं नवयुवकों को फैडरेशन में शामिल होने का आव्हान किया।

राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर ने अपने प्रदेश की गतिविधियों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

महिला प्रकोष्ठ से विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया ने बताया कि बालकों में अच्छे संस्कार कैसे डाले जायें एवं महिलाएं इसमें अपनी भूमिका किसप्रकार निभा सकती हैं। पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा ने आधुनिक संचार साधनों का उपयोग तत्त्वप्रचार में करने पर जोर दिया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मार्मिक सुझावों का लाभ मिला। संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने फरवरी 2012 में होने वाले आदर्श पंचकल्याणक की विशेषताएं बतायी।

सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित संजयजी सेठी जयपुर ने किया।

(आगामी कार्यक्रम....)

– अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा दिल्ली एन.सी.आर. के 17 विभिन्न स्थानों पर दिनांक 4 से 12 जून, 2011 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। **– आदीश जैन**, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष

– अ.भा.जैन युवा फैडरेशन, विश्वास नगर द्वारा दिनांक 6 जून को प्रात: श्रुतपंचमी पर्व का विशाल आयोजन किया जायेगा।

ह्न देवलाली–नासिक में दिनांक 25 से 30 जून तक डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा लब्धिसार–क्षपणासार विषय पर कक्षायें ली जायेंगी। अपने आने की सूचना देवलाली या मुम्बई ऑफिस में अवश्य देवें। साथ में शास्त्र अवश्य लेकर आयें ताकि विषय समझने में आसानी हो।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रारम्भ हुआ, जिससे मुमुक्षु समाज के साथ ही मिशन की एकता और अखण्डता पर प्रश्नचिह्न लगने की स्थिति आ पहुँची। गुरुदेवश्री की उपस्थिति एवं पश्चात् के कुल पचहत्तर वर्षों के इतिहास में जो कार्य नहीं हुआ, हमारे कुछ साधर्मी बन्धु जाने–अनजाने वह कार्य कर बैठे।

समाज की इस स्थिति को देखकर व्यथित हृदय से श्री अनन्तराय ए. सेठ, मुम्बई ने इस दिशा में सार्थक पहल करते हुए सकारात्मक कदम बढाया, जिसे सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज का हार्दिक अनुमोदन प्राप्त हुआ। उनके साथ इस कार्य में श्री पवन जैन, अलीगढ; श्री अजित जैन बड़ौदरा ने भी समर्पित सहयोग प्रदान कर, इस प्रकरण को पूर्ण विराम देने का अभिनन्दनीय प्रयास किया है। मुमुक्षु समाज की एकता और अखण्डता के इन प्रयासों को लोकप्रिय प्रवचनकार डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, जयपुर ने भी अपेक्षित सकारात्मक दिशा प्रदान की। इस प्रयास का सकारात्मकरूप इसी पत्र में अन्यत्र प्रकाशित **निवेदन : अब लोनावाला प्रकरण को पूर्ण विराम दें –** से प्रतिध्वनित होता है।

वर्तमान संचार माध्यमों के द्वारा जैसे ही यह समाचार देश–विदेश तक पहुँचा, समस्त गुरुभक्त साधर्मीजनों ने पत्र, फोन, ई–मेल द्वारा अपना हार्दिक अनुमोदन प्रेषित कर, इस कार्य हेतु सम्बन्धितजनों का आभार व्यक्त किया, जिसे सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज की भावनाओं का दर्पण कहा जा सकता है।

इस सकारात्मक निवेदन से उन साधर्मी बन्धुओं ने भी शान्ति अनुभव की, जो इस प्रकरण से क्षुब्ध थे, और उनमें से अनेकों ने इस सार्थक पहल के प्रति सम्बन्धित व्यक्तियों का आभार भी व्यक्त किया।

प्राप्त अनुमोदनों एवं सन्देशों में से हम कतिपय सन्देशों को इसी अंक में प्रकाशित कर रहे हैं। हमारा समस्त गुरुभक्त साधर्मीजनों से अनुरोध है कि आप अपने सकारात्मक विचार हमें प्रेषित करें। यदि सम्भव हुआ तो उन्हें, विचारों की गहनता, सकारात्मकता एवं स्थान की उपलब्धता के आधार पर प्रकाशित किया जायेगा।

सभी आत्मार्थी मुमुक्षुजन, मिशन की एकता एवं अखण्डता के प्रति समर्पित रहते हुये, पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा दर्शाये गये वीतरागी प्रभु एवं सन्तों के आत्महितकारी सन्देशों को आत्मसात् कर, अपना कल्याण करें एवं लोनावाला प्रकरण को पूर्ण विराम देते हुए अपने पारस्परिक वात्सल्य का परिचय दें – इसी आशा और विश्वास के साथ...।

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह–सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127